अध्याय : 3

"हिरण्यगर्भा" कथ्य चेतना

अध्याय : 3

"हिरण्यगर्भा" कथ्य चेतना

साहित्य और जीवन सदैव एक दूसरे से सम्बन्धित रहें है। नवीन युग के अनुकूल साहित्यकार सदा पुरातन के स्थान पर नवीन मूल्यों की स्थापना करता रहा है। कवि का हृदय नित्य नवीन भावों का उद्‌गम स्थल है। यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में भावों की स्थिति रहती हैं। छायावादी कवियों ने भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर उन्हें मुक्तक की सीमाओं में बाँधते हुए स्वच्छन्द होकर नवीन अभिव्यक्ति प्रदान की।

दिनेश नंदिनी डालमिया की रचनाओं में छायावादी भावों का एक सहज प्रवाह है। उनके कविता संग्रहों में यद्यपि व्यक्तिगत प्रणय सम्बन्धी भावनाओं का समावेश हैं, किन्तु कवयित्री दिनेश नंदिनी लौकिक भावों के साथ उडान भरती हुई अलौकिक भूमि को अनायास ही स्पर्श कर लेती है। दिनेश नंदिनी के भावों में सरसता है, प्रियतम के मिलन के प्रति कहीं अटूट लगन हैं, किन्तु वही एक अनुरक्ति और दार्शनिक विरक्ति का भाव भी सहसा झलक उठता है। साहित्यकार अपने उद्‌गारों का मूल्यांकन, उन्हें अपनी भाव भूमि पर रूपायित करने के पश्चात ही करता है, यही सत्य दिनेश नंदिनी के काव्य में पूर्ण रूप से खरा उतरता हैं।

वस्तुतः उन्हें अपने जीवन से बहुत मोह है और उसे जीवन्त बनाए रखने के लिए वे कुछ न कुछ लिखते रहना बहुत जरूरी समझती है। अपने सतत लेखन-कार्य के उद्देश्य की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा भी है कि, "अनेक दुविधा, आशंका होते हुए भी मुझे जीवन से भयंकर अनुराग है और उसी को सुवासित और जाग्रत रखने का यह आयोजन है।"[1]

उनके निरन्तर कुछ न कुछ लिखते रहने की प्रवृत्ति का एक अन्य कारण यह भी है कि उन्हें अपने जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख के क्षणों की अनुभूति अधिक हुई है और यही उनकी प्रेरणा का मूल है।

दिनेश नंदिनी प्रमुखतः प्रणयपरक भावना की कवयित्री है, किन्तु उनकी कल्पना लौकिक धरातल से चलकर अध्यात्मिक भूमि को सहज ही स्पर्श कर लेती है, जो छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह की कविता में दिनेश नंदिनी ने अपने जीवन के हर एक पहलू पर विचार करते हुए लिखा हैं। उनके वैयक्तिक जीवन की घटना को ही उन्होंने अपने कविता में व्यक्त किया है। "हिरंण्यगर्भा" काव्यसंग्रह लिखने की प्रेरणा उन्हे विरहात्मक जीवन से प्राप्त हुयी। उनके काव्य का भी अपना एक कथ्य है, और वह कथ्य है वैयक्तिक अनुभूति, आत्मपीडा, चिंतनात्मकता, विरह वेदना, अंतर्द्वन्द, पश्चाताप संयोग का प्रतिकात्मक वर्णन। उनकी यह काव्यसंग्रह की, परम्परा भी प्रगति-उन्मुख है। समय का सत्य उसके साथ-साथ चलता हैं -

इस तरह इन समस्त काव्यों में जो प्रमुख प्रवृत्तियाँ उभरी है वे उनकी व्यक्तिवादिता, वेदनानुभूति प्रणयानुभूति, सौन्दर्यानुभुति, सत्यान्वेषण, आदि भावनाओं से सम्बन्धित हैं।

3·1 <u>वैयक्तिक अनुभूति :-</u>

दिनेश नंदिनी के "हिरण्यगर्भा" कविता संग्रह में व्यक्तिवादिता के अनेक काव्य दिखायी देते हैं। इसमें उनका नीजी जीवन तथा स्वअनुभव ही अधिक स्पष्टता के साथ प्रस्तुत हुआ है। अपने जीवन की कडवाहट को पीकर ही उन्हे काव्य लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

जब जीवन की आस्कतीय स्वयं मृत्यु से अठखेलियां करने लगती है और क्षणिक सुख में ही स्थायी सुख का अनुभव करती है तब आत्मा के दर्द की तासीर का पता लगता है। इसतरह कवयित्री के जीवन मे शादी के बाद सुख के क्षण कुछ ही नहीं आये उनके जीवन में अंधकार की ही छाया रहीं इस अन्धकार की

छाया से, और जीवन में आये हुये आत्मपीडा से उन्हें काव्य लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुयी, इस प्रेरणा से उनका काव्य प्रस्तुत हुआ हैं।

कवयित्री दिनेश नंदिनी ने अपने असीम दुःख को सहा है, कवयित्री तिल-तिल जलते हुये दिपक की तरह जीवन से भागने का यत्न नहीं करतीं उसी जीवन से अपना स्नेह सम्बन्ध स्थापित करती हैं, उनकी यही चेतना "जलती पर्ण कुटी में" दिखायी देती हैं। अपने अनुभव को उन्होंने काव्य का रूप दिया है। इस कविता में कवयित्री कहती है कि " मेरा जीवन स्थिर जल की तरह है, उसमें न लहरे दौडती है न तरंग उठते है, हर समय मैं अपने आपको अकेली महसूस करती हूँ हर समय मेरे आँखों से आसुओं की धारा बहती हैं। मैंने जब किसी का इन्तजार करना चाहा तब हरसमय मेरी निराशा हुयी। इसी वजह से मुझे अपने जीवन से नफरत हो गयी।"

और यही उनकी वैयक्तिक अनुभूती यहाँ प्रकट हुयी हैं।

"तब ।
इस पर्ण-कुटी में कातर
मैं अकेली ही घिर जाती
जलती हुई बाहर-भीतर
इन नयनों की वाणी
तब भी
समझ नहीं पाती····"।[2]

प्रेत बाधित" कविता में दिनेश नंदिनी ने अपने नीजी जीवन के नश्वरता को प्रस्तुत किया है। उनके जीवन में आये हुये नश्वरता का प्रतीक उन्होंने अपने पती को माना है। "प्रेत बाधित" कविता के माध्यम से दिनेश नंदिनी ने स्पष्ट किया है कि, जब तुम मेरे जीवन मे आये तो तुम्हारे आँखों में दिन का ढलाव था, तुम्हारा जीवन अन्त की ओर जा रहा था। और ऐसी अवस्था में तुमने मेरी जैसी कच्ची कन्या को क्यो अपनाया तुम्हारे कारण मेरा जीवन नश्वर बन गया हैं।

इस तरह उनके जीवन में आये बुढे पती और उनसे मिलनेवाली नश्वरता ही उनके "प्रेतबाधित" कविता के द्वारा अभिव्यक्त हुई हैं :

"क्यों ?
तुमने क्यों ?
बचपन की कच्ची आँखों मे हेरा ?
अपने पक्के बाल
और लंबी होती परछाइयो को
घूपायित तूफानों के गर्भ में जीवित
प्रेत कथाओं से जीवन को होरा।"[3]

3.2 आस्था और जिजीविषा :-

दिनेश नंदिनी की कविता में आस्था और जिजीविषा के स्वर गहराई से उभरे हैं। यह उनकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है। आस्था से तात्पर्य जीवन के प्रति आस्था से है। यह आस्था मानव की जिजीविषा मे और अधिक निखरने लगती हैं। दिनेश नंदिनी का काव्य मानवास्था और जिजीविषा का काव्य है। उन्होंने यथार्थ जीवन की विकृतियों, विसंगतियों, जीवन व्यापी कटुता, भयावहता, करूणा, विवशता सभी कुछ का अनुभव करते करते समय के साथ चलने का प्रयास किया है, वह उसमें असफल रही है। इसी विवशता और प्रेरणा को दिनेश नंदिनी ने **"सलाखो-पूरे स्वर"**, "विषादगीत" इन कविता के माध्यम से प्रकट किया है।

"सलाखो-पूरे स्वर" कविता में उनकी विवशता दिखायी देती है। शादी के बाद का उनका जीवन जैसे दर्द बन गया है। अपना जीवन सूकर बनाने का उन्होंने बहुत प्रयत्न किया परन्तु उसमें वह असफल रही, उनकी यह विवशता की यात्रा सिर्फ चलती रही और उनका जीवन एक करूण गीत बन गया। यही प्रेरणा उनके काव्य पंक्ति में दिखायी देती है।

"अनंत यात्रा पर निकला पाखी
नये सुर सीखता सलाखो-पुरें
दर्दीले

आकाश को धरती से जोडता
गाता है
यों· सिर्फ दाना-पानी लेने आता हैं।"[4]

दिनेश नंदिनी के काव्य में आस्था का स्वर मिलता है वह वैयक्तिक चेतना के प्रति व्यक्त आस्था से युक्त जिलीविषा का स्वर है। वस्तुतः कवयित्री की आस्था व्यक्तिगत चेतना के प्रति उन्मुख है। "उपवास की रात" जैसी कविता में कवयित्री की आस्था ही व्यंजित है।

"मुझे पहले ही मालूम था
मेरी संदेह उडान
विजय पता का
शर-बिध्द पक्षी-सी
रक्तरंजित करूणा के साथ
मुझे सदा-सदा गायेगी
उपावास की रात
मुझे पहले से मालूम था···।"[5]

निश्चय ही दिनेश नंदिनी अपने संघर्षो, पीडाओं ओर त्रासद स्थितियों को झेलती है, अपितु अतीत के स्मृति बिम्ब ओर आस्था वलयित जिजीविषा के साथ आगे बढ़ती हैं।

3·3 <u>प्रेम एवं सौन्दर्य</u> :-

प्रेम एवं सौन्दर्य एक दूसरे के पूरक तत्व कहे जातें है। प्रेम का सम्बन्ध उदात्त काम भावना रहताहै तथा सौन्दर्य के प्रति आकर्षण की भावना प्रेम के उन्मेष में सहयोग देती है। प्रेमियों के हृदय में निहित आत्म-प्रसार का भाव ही प्रेम की भूमिका को नवीन रूप में व्यंजित करने में सहायक होता है। इस प्रकार हृदय का स्वच्छन्द ढंग से प्रसार करने में प्रेम सदा सहयोगी रूप में सामने आता हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी इसका आत्मा से सम्बन्ध जोडते हुए रस रूप में रागात्मक

चेतना की परिणति होने की सुन्दर व्याख्या की है। वे कहते हैं - "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है।"[6]

नये युग कि कवयित्री दिनेश नंदिनी की प्रणय परक भावों की प्रवृत्ति का चित्रण एक निश्चल अभिव्यक्ति के साथ दिखायी देता है। वैसे तो नारी स्वयं ही प्रेम की एक प्रतिमा है, इसलिए परिस्थिति विशेष में जब वह प्रेम के गीत गाने बैठती है, तो उसके भाव नैसर्गिक रूप से सहज ही प्रकट हो जाते है। प्रतीक्षा करते हुए दिन बीत जाता है, रात का आगमन होता है, किन्तु प्रिय नहीं आता संसार का दिन भर का मेला भी समाप्त हो गया, प्रेमिका का मन पंछी बार-बार प्रिय के विचारों में लीन है।

प्रिय की प्रतीक्षा करते हुए जब बहुत सा समय व्यतीत होता है, तो प्रेयसी की व्यथा और भी गहन हो उठती है। लेकिन इतने आग्रह और प्रतीक्षा के बाद भी जब उनकी प्रेमाकांक्षा पूरी नही होती तब वे निराश हो जाती है और इसी प्रकार उनकी प्रेम कविता में संवेदनाओं की सच्चाई, भावों की सजीवता, अनुभूतियों का आवेग बडे गंभीरता से दिखायी देता है।

वस्तुतः अपने लौकिक प्रेम को त्याग एवं समर्पण द्वारा उन्नयति कर उसे आलैकिक रूप में परिणित करना ही उनके जीवन का लक्ष्य हैं। इस लक्ष्यपूर्ति के प्रयास के अन्तर्गत उनके प्रेम-चित्रण में कहीं-कहीं उच्छृंखलता और मांसलता भी आ गई हैं।

"बूढे गगन में
जवान बिजली की तरह
बार-बार कॉपती
कुँआरी ही रह जाती है
भाव देह से
शिवत्व
सह जाती है।"[7]

इसतरह कुछ आलोचको द्वारा की गई इनकी कटु आलोचना के प्रत्युत्तर में इन्होंने कहा भी है कि, "आप और अन्य लोग जिसे मांसलता समझते हैं उसे मैं मांसलता नहीं समझती क्यों कि मैं प्रेम द्वारा ही उस मुक्ति के मार्ग पर पहुंचने की कल्पना करती हूँ, जिस पर लोग अनेक कठिन साधनों से पहुंचते है। फिर मेरी यह समझ में नही आता कि मेरी रचनाओं की मांसलता को लोग केवल पार्थिव दृष्टि से क्यों देखते है ? सुरदास, नन्ददास आदि कृष्णभक्त कवियों ने कृष्ण के सौन्दर्य का मुझसे भी अधिक मांसल वर्णन किया है, जिसे पढकर सौन्दर्य प्रेमी मुग्ध ही नहीं, तन्मय तक हो जाते है। मेरी दृष्टि में, सौन्दर्य वर्णन में पार्थिव और अपार्थिव का अन्तर करना अपने विकृत और अनुदार दृष्टिकोण का परिचय देना है तथा आलोचना करना है।"[8]

वस्तुतः उनके "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह पर दृष्टि पात करने से स्पष्ट होता है कि उनकी कविताओ मे प्रेम के उच्छृंखल चित्रण से युक्त उदाहरण बहुत कम है, अधिकांशतः सांकेतिक ढंग से अथवा प्रतीको के माध्यम से ही उन्होंने अपने प्रेम भाव की चेतना की अभिव्यक्ती दी है।

"पसली की-सी मुडी अँगुलियाँ
मोमबत्ती की तरह जला कर
तुम कौन-सी यात्रा पर निकले
कि मैं यश धरा
अपने ही भीतर खुलने वाले तहखानों में
तुम्हारी पहचान छुपाये
सीढियाँ-दर- सीढियाँ
उतरती चली गयी।"[9]

3·4 रागात्मक संवेदनशीलता :-

यथार्थ के शिल्पी, और जीवन की विषमताओं और विकृतियों को कविता के चौखट में बिठाने वाली "दिनेश नंदिनी" के काव्य में रागात्मकता संवेदनाओं की अभिव्यंजना भी प्रवृत्ति बन कर आयी है। उनकी रागात्मकता को प्रमुखतः प्रकृति-

सौन्दर्य के अंकन में, मधुर भावों की सांकेतिक व्यंजना में और प्रणयाभिव्यक्ति में देखा जा सकता है। दिनेश नंदिनी के काव्य में प्रकृति की ताजा छवि दिखायी देती है, ये प्रकृति छवियाँ अनुभूती के भयंकरताओं से गुजरते-गुजरते उनके मन को कभी बाँधती है और कभी लुभाती रही है। इस तरह "प्राणो को दिये-सा सजाए", "जलघटिकाओं में बजती उच्छवासिक प्रार्थनाएँ" "धरती का धैर्य " अनंत तहखानों का सिलसिला" आदि कविताओं में प्रकृति के माध्यम से अपने व्यक्तिगत जीवन की रागात्मक संवेदना को व्यक्त किया है।

"जलघाटिकाओं में बजती उच्छवसित प्रार्थनाएं " कविता में कवयित्री की रागात्मक संवेदना व्यक्त हुई है :

"साँसो की उफनती नदी
अतृप्त रीत जायेगी असमय
सूखे तटों पर बिछलते ..."[10]

रागात्मक संवेदनशीलता की अभिव्यंजना दिनेश नंदिनी की प्रणयानुभूतियों में भी मिलती है। यथार्थ कि चित्रकार दिनेश नंदिनी की कविताएं प्रणयभाव से शून्य नहीं है। उनके कुछ कविता में प्रणयानुभूतियों के सांकेतिक चित्र भी मिलते है। ऐसे रागात्मक चित्रों की संख्या उनके काव्य में कम है, किन्तु वह मौलिक और रस-प्रधान काव्य पंक्तियाँ है।

दिनेश नदिनी की कविताओं में अभिव्यंजित प्रणय-भाव ने सामाजिक शील का उल्लंघन कभी नही किया है। उनकी रचनाओं का विषय प्रेम है जो कही एक आध्यात्मिकता, कही पूर्ण मानवीय तथा कही अपने आराध्य देव के प्रति पूर्ण भक्ति के लिए है। इस प्रकार दिनेश नंदिनी की प्रणय भावना स्वस्थ, जीवन्त और प्रेरणास्पद है। स्वस्थ प्रेम की परिचायिका की कुछ पंक्तिया इसप्रकार है -

"कोरे कागजों पर
अश्रुओं के जाल बिछे हैं
जिन में तुम्हारा चेहरा
फूल-सा खिला है ।"[11]

वस्तुतः दिनेश नंदिनी का प्रेम जीवन की अनिवार्यता है। प्रणय का स्वस्थ, सहज, शालीन और पुनीत रूप ही कवयित्री को अधिक प्रिय रहा है। प्रेम के उस छिछले, वासनायुक्त और परिरम्भण वाले रूप को दिनेश नंदिनी ने कभी स्वीकार नहीं किया है। यह वह अनुराग है, जिसके प्रारम्भ , विकास और परिणति सभी स्थितियों में एक सम है - एक सामाजिकता है।

इनके प्रेम का स्वरूप ऐसा है कि उसमें सहजपन के साथ-साथ सन्ताप का समन्वय भी है। इनकी विचारधारा के साथ-साथ उनकी प्रेम भावना भी स्वस्थ एवं विकसित होती गई है। मांसल आधार लेकर चलनेवाला प्रेम विश्व प्रेम में परिणत हो गया है। इसतरह कवयित्री ने अपनी भावानाओं का कविता के द्वारा उदात्तीकरण किया हैं।

3·5 सत्यान्वेषण - आत्मान्वेषण :-

दिनेश नंदिनी के काव्य में सत्यान्वेषण की प्रवृत्ति प्रमुख है। यह सत्यान्वेषण जीवन-सत्य पाने की ललक है : अर्थ पाने का आयाम है और आत्मान्वेषण की भूमिका पर स्थित हैं।

"प्रतिक्षातुर ठिठकी लहर" काव्य पंक्तियों में अपने मन का सत्य भाव व्यक्त किया है। इसमें दिनेश नंदिनी ने स्वयं के अस्तित्व के विषय प्रश्न उठाया है। वे कहती है कि -"मै एक ऐसी औरत हूँ , की मेरी जात का भी पता नहीं और न मेरा कोई नाम हैं।" और इस स्थिति को वे अपने प्रियतम को जिम्मेदार मानती है, यह देश भी उन्हें पराया लगता हैं। यही कारण है कि मौन रहकर कवयित्री ने जो पाया है वही जीवन सत्य जिजीविषा के साये में उनकी कविता की अधिकांश पंक्तियों में दिखायी देता हैं।

"मेरी कोई जात नहीं
न मुझे कभी नाम दिया
तू ने ···

मेरा कोई देश नहीं
न किसी ने धाम दिया
मुझ को ।"[12]

इसतरह आत्मान्वेषण, सत्यान्वेषण या अतीत के स्मृति बिम्बों की प्रवृत्ति ही दिनेश नंदिनी के काव्य का महत्वपूर्ण संकेत है उनकी समस्य काव्य-यात्रा का अपरिहार्य संदर्भ है।

3·6 चिंतनात्मक स्वर :-

दिनेश नंदिनी के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में चितंन का स्वर अधिक दिखायी देता है। "चिन्तन" कविता का आत्मा होती है, वही स्वर दिनेश नंदिनी ने अपने प्रेम, जीवन, परमात्मा शक्ती आदि विविध विषयों में व्यक्त किया है। कवयित्री ने खुद अपने जीवन पर चिन्तन किया है, विचार किया है वहीं चिन्तन अपने कविता के द्वारा प्रस्तुत किया है।

प्रेमचिंतन :-

प्रेमविषयक चिंतनात्मक कविताएं प्रस्तुत करते हुए दिनेश नंदिनी ने जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। "प्यार बनाम अपराध" कविता में उनकी यही प्रवृत्ति दिखायी देती है। इस कविता में कवयित्री कहती हे कि, प्यार जब कोई गलत फहमी का शिकार होता है तो वह प्यार न रहकर अपराध बन जाता है-

"प्यार कहीं जब
अपराध पालता है -
संदेह पर संदेह गढ़ता
अपने हाथों
दीवारें खडी करता
भाले-सा आर-पार सालता है।"[13]

इसतरह यथार्थ प्रेम पर चिन्तन करते हुए कवयित्री को जीवन का रहस्य समझ गया है, ओर इस जीवन के रहस्य को प्रेम चिंतनात्मक काव्य के माध्यम से व्यक्त

किया है। और "प्रेमपक्षी" काव्य में भी उनकी प्रेम विषयक चिंतनात्मकता दिखायी देती हैं।

परमात्मा विषयक चिन्तन :-

दिनेश नंदिनी के प्रेमचिन्तन के साथ-साथ ईश्वर का परमात्मा विषयक चिंन्तन की प्रवृत्ति भी दिखायी देती है। ईश्वर विष्रयक चिन्तन करते हुए दिनेश नंदिनी ने मनुष्य के रहस्य को खोलने का प्रयत्न किया है - यही चिन्तन उनके "सत्य" कविता में दिखायी देता है -

"मनुष्य ने
अपने अंधेपन को
छिपाने के लिए
सत्य के पूरे चेहरे को
आंशिक सत्यों से ढँक दिया"[14]

इस कविता के माध्यम से कवयित्री ने यह स्पष्ट किया है कि, "आज का मनुष्य बडा स्वार्थी है, अपने गुनाह को छिपाने के लिये उसने ईश्वर को भी नही छोडा हैं। अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए उन्होंने ईश्वर के मुर्ति को उठाया और मन्दिर में रख दियाहै।" इस तरह परमात्मा विषयक चिन्तन करते हुए कवयित्री को जीवन की यथार्थता का दर्शन हुआ है। "नर-नारायण" इस कविता मे भी उनका परमात्मा का विषयक चिन्तन दिखायी देता है।

दिनेश नंदिनी नये युग की कवयित्री होने के साथ-साथ संवेदनशील भी है, उन्होंने जीवन को नजदिक से देखा है, अपने जीवन में असफल रहने के कारण उनके "जीवन-खेल" कविता में जीवन विषयक चिन्तन की प्रवृत्ति भी उभर गयी है। इस तरह उनके "हिरण्यगर्भा" की कविता में शक्तिविषयक चिन्तन, आत्मचिन्तन आदि अनेक चिन्तन के विषय प्रकट हो गये है।

3·7 वेदनानुभूति :-

दिनेश नंदिनी का काव्य वेदना का काव्य हैं। उन्होंने जीवन में अनेक त्रासदि को सहा है, अतः उनके जीवन का नाता करूणा और वेदना से ही है, उनका वेदना बोध न केवल गहरा है, अपितु व्यापक भी है। यही कारण है कि वे अपनी आत्मा में वेदना को जलता हुआ महसुस करती है - उनकी वेदना-विरह की वेदना है, विफल प्रेम की वेदना है, और यहीं उनके काव्य में विरह और निराशा की मार्मिक व्यथाएँ लेकर प्रकट हुई है। इसतरह इनकी विरह की कविताओं को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि, इनका विरह दूसरे कवियों के तुलना से अलग प्रकार का है ,यह विरह अब जीवन को मृत्यु का अनुभव करानेवाला नहीं है वह जीवन में इतना रम गया है कि अब वही जीवन का सुहाग प्रदीप बन गया है। इसतरह "ऑखों में मचलती अलकनंदा" कविता के द्वारा कवयित्री ने अपनी विरह को व्यक्त करते हुए कहा है कि - "आज या कल तुम्हें अलग होना ही था और तुम मुझसे अलग भी हो गये, लेकिन तब मेरी अवस्था का मै क्या वर्णन करूँ ? तुम्हारे अलग होने से मेरे ऑखों से जो ऑसू बह रहें है उसे किस चट्टान पर उतारूँ कि जिससे एक धारा बनकर बहें। तुम्हारे जाने से मेरा जीवन छिन्न विछिन्न हो गया, जैसे जीने की तमन्ना ही खत्म हो गयी।" इसप्रकार उनकी विरहता का दर्शन उनके काव्यों में होता हैं।

दिनेश नंदिनी ने सच्चाईयों का गला नहीं घोटा, अपने दाहक से दाहकतम अनुंभवों को छिपाया नहीं, उनकी वेदनानुभूति न तो नकली है न निस्तेज करने वाली और न आरोपित ही है। इसी वेदना की व्यापकता उनके "मुर्ति और मूर्तिकार" "रातभर" , "ओ गदंवाही पवन" आदि कविता में प्रकट हुयी हैं।

निष्कर्ष :-

इसप्रकार स्पष्ट हो जाता है कि दिनेश नंदिनी का काव्य आत्मान्वेषण, आत्मपरिष्कार, व्यक्तिगत अनुभूति से होता हुआ अतीत के स्मृति बिम्बों में इतना खो गया है कि उसमें परम्परा का प्रवाह कही नही दिखायी देता, प्रमुखतः उनका

काव्य प्रणय, सौन्दर्य, मानवास्था, सत्यान्वेषण और यथार्थ बोध का काव्य है। उसमें जीवन के प्रति जिजीविषा और दर्द का जीवन दर्शन है, आंतरिक प्रेरणा और अनुभूति से ओतप्रोत उनका "काव्यसंग्रह" अत्यन्त हृदयस्पर्शी और मार्मिक है। दिनेश नंदिनी ने अपनी वेदना को शक्ति का केन्द्र, परिष्कार का साधन, और मुक्ति का प्रेरक माना है। उनके समग्र काव्य में विवाह से पूर्व एक प्रेम-सम्बन्ध मे निराशा और विवाह के बाद भी आजीवन पुरूष के पुर्ण प्रेम की प्राप्ति में असफलता ही प्रकट हुयी है और यही उनहो सतत साहित्य-साधना का मूल हैं।

संदर्भ सूची

1· दिनेश नंदिनी डालमिया : कृतित्व के विविध आयाम, सम्पादक, अर्चना चतुर्वेदी, पृ·, 22

2· हिरण्यगर्भा, दिनेश नंदिनी डालमिया, पृ·, 12

3· वही, पृ·, 41

4· वही, पृ·, 15

5· वही, पृ·, 13

6· आधुनिक कवि और उनका काव्य, डॉ·दयानन्द शर्मा "मधुर", पृ·,183

7· हिरण्यगर्भा, दिनेश नंदिनी डालमिया, पृ·, 36

8· दिनेश नंदिनी डालमिया : कृतित्व के विविध आयाम, सम्पादक, अर्चना चतुर्वेदी, पृ·, 37

9· हिरण्यगर्भा, दिनेश नंदिनी डालमिया, पृ·, 60

10· वही, पृ·, 25

11· वही, पृ· 30

12· वही, पृ·, 54

13· वही, पृ·, 21

14· वही, पृ·, 68